Journal of Social Review and Development, 2024; Special 1:155-157 ISSN NO: 2583-2816

Special Issue
"(Global Partnership: India's Collaboration Initiatives for Economic and Social Growth)"

वैश्वीकरण के युग में हिंदी की भूमिका

प्रोफेसर सपना भारती
संस्कृत विभाग, दमयंती राज आनंद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिसौली, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत
Correspondence Author: डॉ० सपना भारती

सारांश
वैश्वीकरण का अर्थ है विश्व्यापी पारस्परिक जुडाव जो विचार पूंजी वस्तु और लोगों के प्रवाह से उत्पन्न होता है।
वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है। इसके आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सांस्कृतिक रूप से रहन–सहन, वेश–भूषा, भाषा इत्यादि पर प्रभाव पद रहा है।
अंग्रेजी वर्चस्व के युग में जब दुनिया की कई भाषाएँ लुप्त हो रही है ऐसे में हिंदी ने अपने स्वरुप में परिवर्तन लाकर स्वयं को जीवंत किया है। आज हम हिंदी के कई रूप से अवगत हो रहे है जैसे–विज्ञापन की हिंदी, खेल–कूद की हिंदी, बोलचाल की हिंदी, फिल्मों की हिंदी, कार्यालयी हिंदी, संचार माध्यम की हिंदी, बाज़ार की हिंदी, मीडिया की हिंदी, तकनीक की हिंदी इत्यादि। अपने परम्परागत रूप से इतर हिंदी इन नए रूपों में खूब पुष्पित दृ पल्लवित हो रही है। इसके अतिरिक्त हिंदी की विदेशी शैलियाँ भी विकसित हो रही हैं।
भारत की सांस्कृतिक पहचान हिंदी भाषा नए दौर में नए स्वरुप में जीवन हुई है। बाज़ार की भाषा बनी हिंदी भारत के कोने-कोने से लेकर विश्व के कोने–कोने तक प्रसारित हो रही है।
मीडिया, तकनीक, इन्टरनेट इत्यादि हर क्षेत्र में हिंदी धूम मचा रही है, लेकिन वैश्वीकरण ने इसके साथ–साथ हिंदी के सामने कई चुनौतियां भी कड़ी की है। वैश्वीकरण की चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक है कि हिंदी को जनोन्मुखी, रोजगारपरक, सरल–सुगम बनाया जाए ताकि यह विश्व मंच पर ताकतवर भाषा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा सके।

मूलशब्द: बहुआयामी अवधारणा, सांस्कृतिक पहचान, चुनौतियां, जनोन्मुखी, विश्व भाषा

परिचय

वैश्वीकरण क्या है?

वैश्वीकरण का अर्थ एक ऐसी व्यवस्था से है जिसके द्वारा विश्व के सभी देशों की अर्थव्यवस्था का एकीकरण किया जाता है उसे वैश्वीकरण कहते है।

वैश्वीकरण व्यवस्था 'विश्वव्यापी है वर्तमान युग वैश्विक का है हम क्या खाते है क्या पहनते है, क्या सोचते है सभी पर वैश्वीकरण का प्रभाव दिखायी देता है हिंदी भाषा असर बाज़ार पर अत्याधिक दिखायी पड़ता है हिंदी सभी भाषाओं में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बोली जाने वाली भाषा है जैसे वर्तमान में 50 करोड़ से अधिक लोग हिंदी का प्रयोग बोलने और लिखने में करते है किसी भी भाषा के वैश्विक स्वरुप से परिचित होने के लिए यह पता लगाना बहुत ही आवश्यक कि विश्व स्तर पर कितने लोग उसे बोलने में प्रयोग करते है इस सन्दर्भ में यदि हिंदी भाषा की बात की जाए तो ज्ञात होगा कि 1931 की जनगणना के पश्चात भारत में लगभग 69% प्रतिशत हिस्से में हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है।

हिन्द महासागर के मध्य में बसा हुआ देश मॉरिशस। मॉरिशस को लघु भारत भी कहा जाता है। मारीशस का इतिहास बताता है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' के आगमन से वहां देवनागरी लिपि और खड़ी वोली का प्रचलन हुआ।

वैश्वीकरण का हिंदी पर प्रभाव

हिंदी भाषा के प्रचलित कवियों ने कहा कि भाषा तो बहते पानी के समान है वैसे तो भाषा हमेशा परिवर्तन शील है परन्तु कुछ वर्षो से भाषा के क्षेत्र में परिवर्तन हुआ है हिंदी/संस्कृत भाषा को कोई नहीं जानता था क्योकि वहां अत्याधिक क्षेत्रीय भाषा या अंग्रेजी भाषा का बोल चाल में प्रयोग किया जाता था पर जैसे जैसे भाषाओ का विस्तार हुआ तो देखने को मिला कि कुछ ही वर्षों में हिंदी को बोलने और सीखने वाली का प्रतिशत 22% तक हो गया है 2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल आबादी में हिंदी को मातृभाषा के रूप में बोलने वाले 43–63 प्रतिशत से बढ़कर बोली जाने लगी जो कि 2001 में 41% थी।

भारत में जब आर्थिक वैश्वीकरण को स्वीकारा तभी से हिंदी का भाषा के रूप मे प्रयोग करने वालों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुयी है हिंदी अपने राष्ट्रीय स्वरुप में हैदराबादी हिंदी दक्खिनी हिंदी, अरूणाचली हिंदी, सांस्कृतिक किलिष्ठ हिंदी आदि में फ़ैल गयी है। हिंदी की यदि वैश्विक स्वरुप की बात करें तो ज्ञात होता है कि वैश्विकरण ने हिंदी को भारत की राजभाषा का स्थान दिया है क्योकि हिंदी भाषा संस्कृत भाषा से उत्पन्न हुयी है जो पूर्ण रूप से सांस्कारिक भाषा है हिंदी भाषा सिर्फ भाषा नहीं अपितु एक व्यवहार है जो की भारतीय संस्कृति से भाषा के माध्यम से प्राप्त हुयी है हिंदी भाषा के स्वर–व्यंजनों से मिलकर ही भारत की अन्य भाषाओं का निर्माण हुया है यह भाषा ही मानव के अन्त: करण में विश्व कल्याण की भावना को जागृत करती है तभी तो विद्वानो ने हिंदी को राजभाषा का स्थान दिया।

हिंदी भाषा के उद्भव एवं विकास और शब्द निर्माण

भाषा में हिंदी भाषा के उद्भव व विकास की चर्चा करें तो ज्ञात होता है कि भाषा का कोई सार्वकालिक स्वरुप नहीं है हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुयी है प्राचीन काल में भारत के कुछ हिस्सों में सिर्फ संस्कृत भाषा का उपयोग किया जाता था शनै–शनै संस्कृत भाषा से ही हिंदी भाषा उद्भव हुआ, हिंदी के अधिकतर शब्दों की व्युत्पत्ति, देववाणी, सुरवाणी, गीर्वाणभारती संस्कृत से हुई है परन्तु हिंदी भाषा ने फ़ारसी , तुर्की अंग्रेजी , तुर्की आदि अनेकों भाषाओं को आत्मसात किया है कुछ भाषाओं के शब्दों का अनुवाद हिंदी भाषा ने दूसरी भाषाओं की तरह ही प्रयोग किया जैसे :– कर्म (KARM), YOGA (योग) गुरु (GURU) इत्यादि हिंदी भाषा में भी अन्य भाषाओं से शब्द आए जैसे – स्टेशन, स्टेशनरी, कंप्यूटर इत्यादि अंग्रेजी के शब्द है जिनका हिंदी के शब्द की भांति ही प्रयोग हो रहा है इसी प्रकार अरबी, फ़ारसी के अनेक शब्द जैसे ईमानदारी, इमारत आदि तथा तुर्की भाषा में इंसान, दुनिया शीशा इत्यादि यह शब्द तुर्की भाषा के है लेकिन हिंदी शब्द कोष में इनका प्रयोग होता है जैसे पुर्तगाली भाषा में शब्द है – अलमारी, फ़ालतू इत्यादि।

हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर पहुचानें में आने वाली कठिनाइयां

हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर पहुचानें में अनेकों समस्याओं का सामना पड़ा जानकार व्यक्तियों को ज्ञात ही नहीं है कि शुद्ध हिंदी के शब्द कौन से होते है वह अधूरे ज्ञान से ही हिंदी के मिश्रित शब्दाक्षरों को ही हिंदी (अरबी, फ़ारसी, तुर्की) बताते है। वह कहते है "अधजल गगरी छलकत जायें"।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के व्यापक प्रचार प्रसार के निर्मित अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई तथा जितना हो सका उतना अनुदान भी दिया गया परन्तु जिस लक्ष्य प्राप्ति के लिए अनुदान दिया गया उस सफलता तक नहीं पहुँच सका। भारत विश्व व्यापार से जुदा पर उसका माध्यम केवल अंग्रेजी य हिंदी य अन्य भाषाओं की उपस्थिति विश्व व्यापार पर काफी कम थी।

जैसे विज्ञापन कंपनियों विज्ञापनों को अंग्रेजी में बनाते थे तथा हिंदी स्पष्ट अनुवाद नहीं कर पाते थे जिसके फल स्वरुप सरकारी कार्यालयों में हिंदी के नाम पर अनुवाद कृत्रिम तथा अस्पष्ट भाषा में तैयार होता था जो आम व्यक्ति के समझने में कठिनाई पैदा करता था तथा हिंदी और अंग्रेजी भाषा की अजीब सी वात्सल्य बन रही थी जबकि हिंदी साहित्य की तो बात ही कुछ और है हिंदी के विभिन्न रस (जैसे वरुण, रौद्र, वात्सली इत्यादि अलंकार और छंद आदि इन सभी में इतनी विविधता और रस, आनंद तथा सौन्दर्य है कि कुछ क्षण के लिए मनुष्य अलग ही दुनिया में रम सा जाता है परन्तु आज वर्तमान युग में साहित्य का एहसास काल्पनिक और अध्यात्मिकण होकर यांत्रिक अधिक बन गया है। मनुष्य जब से यांत्रिक हुआ है जब से एक चलता फिरता रोबोट हो गया है उसके अन्दर की भावनाएं ख़त्म सी होती जा रही है उदाहरण के लिए पहले मनुष्य आपस में मिलता जुलता था तो मानवीय संवेदनाएं जैसे बातचीत, रिश्ते का एहसास स्पर्श, इत्यादि भावनाएं उत्पन्न हुया करती थी पर जैसे नई तकनीकी जैसे कंप्यूटर, मोबाइल इत्यादि आये तब से मानव यांत्रिक अधिक हो गया है परन्तु इन सब को देखते हुए हिंदी के द्वारा ही इन एहसासों को पुन: जीवित करना होगा। वर्तमान युग यांत्रिक युग है पर इसका लाभ हिंदी भाषा को भी हुआ है जैसे पहले कंप्यूटर पर तकनीकी कार्य केवल अंग्रेजी भाषा में ही होते थे परन्तु आज कंप्यूटर, मोबाइल फोन में भी हिंदी टाइपिंग, गूगल हिंदी आदि ऐसे ऐप्स आ गए है जो हिंदी भाषा को आज के युग की वर्तमान भाषा बनाते हैं आज मोबाइल पर सन्देश स्पीकर द्वारा बोल कर हिंदी में सुगमता से भेजे जाते है और मोबाइल, कंप्यूटर पर हिंदी में भी सारे कार्य आसानी से होते है यह हिंदी का वैश्वीकरण की ओर एक सार्थक और सशक्त कदम है।

निष्कर्ष

हिंदी आज विश्व भाषा बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व मंच पर एक सशक्त भाषा बन कर प्रस्तुत हो रही है वैश्वीकरण स्तर से देखे तो चार दशकों में दक्षिण भारत में केवल हिंदी बोलने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। प्रवासी हिंदी साहित्य, हिंदी साहित्य के लिए हमें प्रतिबद्ध रहना होगा आज जरुरत इस बात की है कि हम, साइंस, वाणिज्य तथा नए प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने में तेजी लाए इसके प्रयास करने होंगे और यह तभी सम्भव है जब हम अपने दायित्वों को समझेंगे आज समय की मांग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हो आज वैश्वीकरण के दौर में जिसे हम बाजार वाद कह सकते वही संस्कृति, वही भाषा व्यवहार में आएगी जिसे बाज़ार उपलब्ध कराए जो भाषा व्यवहार में आयेगी जिसे बाज़ार उपलब्ध कराए जो नई–परिस्थितियों में भी स्वंय को जीवंत रख सके। कोई भी भाषा अपनी व्यापक उपयोगिता से ही शक्तिशाली बनती है हिंदी आज अधिक प्रभावशाली भाषा के रूप में हमारे सामने है आज हिंदी जनभाषा के साथ–साथ राजभाषा भी है विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है हिंदी अपने विकास के सोपानों पर चढ़ रही है। अभी तक हिंदी को विश्व स्तर पर प्रचारित दृ प्रसारित करने में मीडिया, बाज़ार और मनोरंजन ने विशेष भूमिका निभायी है, पर और आगे जाने हेतु सरकारी, गैर–सरकारी एवं व्यक्तिगत स्तर पर निम्नलिखित प्रयास आवश्यक है :–

- सरकारी मोह को त्याग कर सरल, स्वाभाविक, व्यावहारिक हिंदी को प्रोत्साहित किया जाए। हिंदी को आम जनता से जोड़ा जाए। उसे जनोन्मुखी बनाया जाए।
- हिंदी को रोजगारपरक बनाया जाए ताकि हिंदी ज्ञान, सत्ता और लाभ की भाषा बन सके।
- सबसे महत्वपूर्ण है कि हिंदी के प्रति मानसिकता में परिवर्तन लाया जाए। हिंदी कोई पिछड़ी, अवैज्ञानिक भाषा नहीं है, वरन यह एक समृद्ध और गतिशील भाषा है।
- हिंदी को विशव भाषा बनने के लिए पहल करनी होगी। संयुक्त राष्ट्र संघ के आधिकारिक भाषाओं में हिंदी को शामिल करने के लिए हमें मजबूती से अपनी माँग रखनी होगी।
- हिंदी को प्रचारित दृप्रसारित करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति, व्यापक योजना की आवश्यकता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि जो देश अपनी भाषा को प्रधानता नहीं देता, वह देश हमेशा के लिए अन्धकार में डूब जाता है, और वहां स्वतंत्रता या ज्ञान का सूर्य प्रदीप्त नहीं होता।

कहा जाता है कि भाषा का प्रयोग ही उसकी जीवंतता को परिचायक है। अत: आज आवश्यक है कि हम हिंदी भाषा का आधिकारिक प्रयोग करें और इसे विश्व स्तर पर प्रचारित करें।

सन्दर्भ

1. मोहम्मद इरफ़ान मलिक, आलेख, दश हरियाणा वेबसाइट, फरबरी 2019, "हिंदी भाषा चुनौतियां व समाधान" http://deshryaana-in/archives/9872
2. अमित कुमार विश्वास, आलेख, हिंदी समय जर्नल, " वैश्वीकरण और हिंदी की चुनौतियां" http://www-hindisamay-com/content/10793/1/1/लेखक–अमित कुमार विश्वास की लेख वैश्वीकरण और हिंदी की चुनौतियां.cspx

3. डॉ० विमलेश शर्मा, आलेख, अपनी माटी साहित्य पत्रिका, दिसम्बर 2013, "वैश्वीकरण और हिंदी: प्रसार व प्रवाह "http://www/apnimaati-com/2013.12blog-post2233.html
4. प्रो० नरेश मिश्र, आलेख, राजभाषा भारती पत्रिका, मार्च, 2018, "भारतीय संकृत की संवाहिका है हिंदी" http://rajbhasha-gov-in/sites/defult/files/rb154-pdf
5. गंगानन्द झा, आलेख, प्रवक्ता वेबसाइट, " हिदी की प्रासंगिकता", http://www-pravakta-com/hindi-ki-ISBN
6. केशव मोहन पांड, आलेख, संवादरंग वेबसाइट, जनवरी 2017, "समय के साथ कदम मिलाती हिंदी" http://samvadrang-com/le:&ds&lkfk&dne/
7. बच्चू प्रसाद सिंह, आलेख, भारतीय डिसकवरी वेबसाइट, "हिंदी का अन्तर्राष्ट्रीय परिपेक्ष्य" http://m-bharatdiscovery-org/india/fganh/ हिंदी का अन्तराष्ट्रीय परिपेक्ष्य– बच्चूप्रसाद सिंह
8. प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद, आलेख, भारतीय डिसकवरी वेबसाइट, " अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी" http://m-bharatdiscovery-org/india/ अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में हिंदी– प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद।